# परसाई की पारसाईता

**चेतन चंद्र जोशी**
सहायक प्राध्यापक हिंदी, गेस्ट (राजकीय महाविद्यालय गरुड़, बागेश्वर, उत्तराखंड-263641)
एवं शोधार्थी हिंदी (कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखण्ड)
मोबाईल नं0-9412092340

हिन्दी व्यंग्य विधा का जिक्र आते ही अगर कोई एक नाम जेहन में सबसे पहले दस्तक देता है तो वो है 'हरिशंकर परसाई'। हालांकि हिन्दी व्यंग्य विधा में नामचीन व्यंग्यकारों की फेहरिस्त ठीकठाक रही है, लेकिन परसाई अद्वितीय हैं। देश, काल और परिस्थिति चाहे कुछ भी हो अतीत, वर्तमान या भविष्य परसाई जी के व्यंग्यों की तासीर में ताजगी बरकरार दिखती है। ये किसी चमत्कार से कम नहीं लगता कि एक व्यक्ति के लिखे गए व्यंग्य आम साधारण इंसान को बिना दिमागी कसरत के उतना ही लुभाते हैं जितना कि एक प्रबुद्ध पाठक को। ताज्जुब की बात ये की कोई ऐसा विषय अथवा समस्या नहीं जिस पर उनकी नजर अथवा लेखन असरदार ना रहा हो।

'विकलांग श्रद्धा का दौर' में वे श्रद्धा के विकलांग होने पर मिलने वाली सहानुभूति को जिस तरह से प्रस्तुत करते हैं वो आज भी बरकरार है। परसाई जी लिखते हैं-"क्या मेरी टांग में से दर्द की तरह श्रद्धा पैदा हो गई है? तो यह विकलांग श्रद्धा है। जानता हूं, देश में जो मौसम चल रहा है, उसमें श्रद्धा की टांग टूट चुकी है। तभी मुझे भी यह विकलांग श्रद्धा दी जा रही है। लोग सोचते होंगे- इसकी टांग टूट गई है। यह असमर्थ हो गया। दयनीय है। आओ, इसे हम श्रद्धा दे दें।" विकलांग अथवा दिव्यांग श्रद्धा का दौर आज के समय में पीक पर है। अभी कुछ दिन पहले देश की सर्वोच्च परीक्षा यानि सिविल सेवा परीक्षा में फर्जी विकलांगों की श्रद्धा ने देश को हैरत में डाल दिया। यानि विकलांग श्रद्धा को यदि फर्जी प्रमाणपत्र मिल जाए तो नौकरी में भी सहानुभूति मिलना तय है।

ऐसे ही 'पगडंडियों का जमाना' में वो जिस भ्रष्टाचार को रेखांकित करते हैं वो आज भी उसी सूरतेहाल में देखने को मिलता है। "सफलता के महल का सामने का आम दरवाजा बन्द हो गया है। कई लोग भीतर घुस गये हैं और उन्होंने कुण्डी लगा दी है। जिसे उसमें घुसना है, वह रुमाल नाक पर रखकर नाबदान में से घुस जाता है। आसपास सुगंधित रूमालों की दुकानें लगी हैं। लोग रुमाल खरीदकर उसे नाक पर रखकर नाबदान में से घुस रहे हैं। जिन्हें बदबू ज्यादा आती है और जो सिर्फ मुख्य द्वार से घुसना चाहते हैं, वे खड़े दरवाजे पर सिर मार रहे हैं और उनके कपालों से खून बह रहा है।" कहीं पेपर लीक हो रहें हैं तो कहीं निकलने से पहले ही पदों का सौदा हो जा रहा है। हर जगह भ्रष्टाचार की पौंध लहलहा रही है और इनकी जड़ ढूंढो तो ये आप और हम जैसे लोगों के घरों में भी संलिप्त मिलेंगी। इसलिए तो सुगंधित रूमालों की दुकानें दिनों दिन बढ़ती जा रहीं हैं। जिनके पास इसे खरीदने के पैसे नहीं सिवाय मेहनत के वो आज भी इस भ्रष्ट सिस्टम के दरवाजे पर बैठ माथा पटक रहे हैं, जिससे लाठी, डंडों और खून के सिवा उन्हें कुछ नहीं मिल रहा है।

'आवारा भीड़ के खतरे' में वो जिस खतरे से देश को आगाह कर रहे हैं वो खतरा आज बड़े स्तर पर फैल चुका है। "दिशाहीन, बेकार, हताश, नकारवादी, विध्वंसवादी बेकार युवकों की यह भीड़ खतरनाक होती है। इसका उपयोग खतरनाक विचारधारा वाले व्यक्ति और समूह कर सकते हैं। इस भीड़ का उपयोग नेपोलियन, हिटलर और मुसोलिनी ने किया। यह भीड़ धार्मिक उन्मादियों के पीछे चलते लगती है। यह भीड़ किसी भी ऐसे संगठन के साथ हो सकती है जो उन्माद और तनाव पैदा कर दें। फिर इस भीड़ से विध्वंसक काम कराए जा सकते हैं। यह भीड फासिस्टों का हथियार बन सकती है। हमारे देश में यह भीड़ बढ़ रही है। इसका उपयोग भी हो रहा है। आगे इस भीड़ का उपयोग सारे राष्ट्रीय और मानव मूल्यों के विनाश के लिये, लोकतंत्र के नाश के लिये करवाया जा सकता है।" इस भीड़ के फलने-फूलने में किसका सहयोग है ये बात किसी से छुपी नहीं है। ये भीड़ अगर जाग गई या काम पर लग गई तो उनका वोटबैंक और उससे पनप रही राजनीति खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए यह भीड़ आगे और अधिक होगी जिसके लिए हम सब भी बराबर रूप में जिम्मेदार होंगे।

परसाई जी का किरदार अपने जीवन और लेखन के प्रति ईमानदार रहा है। उसमें दीनता और दरिद्रता भी नजर आती है लेकिन उसे छुपाने या सहानुभूति का चोला ओढ़ाने का काम परसाई जी नहीं करते वे उसे उसी रूप में व्यंग्य के तड़के के साथ प्रस्तुत करते हैं। वे लिखत हैं- "जब मैं सचमुच प्राण-त्याग करूँगा, तब इस बात की आशंका है कि झूठे रोनेवाले सच्चे रोनेवालों से बाजी मार ले जाएँगे।"

परसाई जी समाज में मौजूद विसंगतियों पर आम सरल शब्दों में ऐसे व्यंग्य प्रस्तुत करते हैं जो हास्य के तड़के के साथ एक महीन मार भी मारते हैं। ऐसा ही एक व्यंग्य 'निंदा रस' है जिसमें 'निंदा' के विषय में जिस तरह से परसाई जी ने लिखा वह निंदा और उसका रस आज भी जारी है। "निंदा का उदगम हीनता और कमजोरी से होता है। निंदा करके उसके अहं को तुष्टि मिलती है। ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों निंदा की प्रवृत्ति में दिनों-दिन इजाफा होता चला जाता है।" ऐसे ही धर्म के नाम पर पनप रहे भ्रष्टाचार पर वे उन ठेकेदारों को भी आड़े हाथों लेते हैं जो लोगों को बेवकूफ बना अपना काम निकाल रहे हैं। "वैष्णव करोड़पति है। भगवान विष्णु का मन्दिर। जायदाद लगी है। भगवान सूदखोरी करते हैं। ब्याज से कर्ज देते हैं। वैष्णव दो घंटे भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, फिर गद्दी-तकिये वाली बैठक में बैठकर धर्म को धन्धे से जोड़ते हैं। धर्म धन्धे से जुड़ जाये इसी को 'योग' कहते हैं।" समाज में मौजूद रूढ़िवादी सिद्धांतों की भी वो जमकर बखिया उधेड़ते हैं। "यह (जाति) पुराना रोग है। पर कुछ रोग रोगी को प्रिय हो जाते है, जैसे दाद का रोग। दाद खुजलाने में मजा आता है। जातियों को भी दाद हो जाती है, जिसका वे इलाज न करके उसे खुजलाने का मजा लेने लगती हैं।" सड़क किनारे प्लास्टिक खाती गाय को हम न जाने कितने वर्षों से देखते आ रहे हैं लेकिन परसाई जी की नजर गाय के उस दीनता पर पड़ती है जिसे आज भी हम सब देख रहे हैं, वे लिखते हैं- "दूसरे देशों में गाय दूध के उपयोग के लिए होती है, हमारे यहाँ वह दंगा करने, आंदोलेन करने के लिए होती है। हमारी गाय और गायों से भिन्न है" इस कथन की वास्तविकता आज के संदर्भ में और अधिक प्रगाढ़ हो चली है। अभी हाल ही इसकी ताजगी भी देखने को मिली जिसमें गौभक्तों ने गौतस्कर समझ एक हिन्दू व्यक्ति की ही पीट-पीटकर हत्या कर दी। परसाई जी ने जो भी लिखा वेह कालजयी हो गया। उन्हें पढ़ते हुए यह अहसास होता है जिस किसी विषय या विसंगति पर उन्होंने लिखा वह आज भी बदस्तूर जारी है।परसाई जी समाज की रग-रग से वाकिफ रहे। बाहर कुछ और अंदर कुछ वाले इस मुखौटे को उन्होंने बेनकाब करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी।

इन सब में बड़ी बात यह की वह खुद को भी नहीं बखस्ते यदि वह स्वयं उसके गिरफ़्त में हों। 'तीसरे दर्जे के श्रद्धेय' व्यंग्य में वो लिखते हैं- "श्रद्धेय के भी दर्जे होते हैं। तीसरे दर्जे का श्रद्धेय प्रेरणा नहीं देता। वह शर्म देता है। गांधीजी की बात अलग थी। वे तीसरे को भी पहले दर्जे की महिमा दे देते थे। हम तो पहले दर्जे में बैठकर भी तीसरे की हीनता अनुभव करते हैं। संत और बुद्धिजीवी में यही फर्क है। मुझे विशेष सावधान रहना पड़ता है। पाठ्यक्रम में आ गया हूँ। कोर्स का लेखक हो गया हूँ। कोर्स का लेखक वह पक्षी है, जिसके पाँवों में घुँघरू बाँध दिये गए हैं। उसे ठुमककर चलना पड़ता है। ये आभूषण भी हैं और बेड़ियाँ भी। रायल्टी मिलने लगती है तो जी होता है कि 'सत्साहित्य' ही लिखो, जिससे लड़के-लड़कियों का चरित्र बने। उसे आचार्यगण तुरंत गले लगा लेंगे। परेशानी यही है कि 'सत्साहित्य' कुल आठ-दस वाक्यों में आ जाता है, जैसे – सत्य बोलो, किसी को कष्ट मत दो, ब्रह्मचर्य से रहो, परायी स्त्री को माता समझो, आदि।"

व्यंग्यकार की बड़ी खूबी यही है कि वह अपनी कमियों पर पर्दा डालने के बजाय उसमें व्यंग्य का जायका डालने की कोशिश करता है और इस कार्य में परसाई जी से बेहतर कोई नहीं। परसाई जी समाज के उन फर्जी चारित्रवादियों को भी आड़े हाथों लेते हैं जो किसी स्त्री और पुरुष को साथ देख लें तो तुरत व्यभिचारी घोषित कर देते हैं। इस तरह के लोगों पर परसाई जी लिखते हैं- "किसी स्त्री और पुरुष के संबंध में जो बात अखरती है, वह अनैतिकता नहीं है, बल्कि यह है कि हाय! उसकी जगह हम नहीं हुए। ऐसे लोग मुझे चुंगी के दरोगा मालूम होते हैं। जो हर आते-जाते ठेले को रोककर झांककर पूछते हैं- तेरे भीतर क्या छिपा है?"
इसी में वे लिखते हैं, "कितने लोग हैं जो 'चरित्रहीन' होने की इच्छा मन में पाले रहते हैं, मगर हो नहीं सकते और निरे 'चरित्रवान' होकर मर जाते हैं। आत्मा को परलोक में भी चैन नहीं मिलता होगा और वह पृथ्वी पर लोगों के घरों में झांककर देखती होगी कि किसका संबंध किससे चल रहा है।" परसाई जी समाज की नब्ज को जिस तरह पकड़ते थे उससे साफ समझ में आ जाता है कि समाज किस बीमारी से जूझ रहा था। आज भी ये बीमारियाँ समाज में बुरी तरह फैली हुई हैं बस फर्क सिर्फ़ इतना है कि आज परसाई जी जैसा वैद्य इन बीमारियों के इलाज के लिए खड़ा नहीं दिखता और जो दिखता भी है तो उसे बीमारी का ठीक-ठीक अंदाजा नहीं। इसलिए इन रोगों की नब्ज पकड़ने से पहले साहसिक और बौद्धिक तौर पर मजबूत होना होगा जो इस दौर की पारसाईता को परसाई की तरह जिंदा रख सके।

**********

**संदर्भ:-**

I. परसाई रचनावली- भाग३, विकलांग श्रद्धा का दौर , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.३७
II. पगडंडियों का जमाना, हरिशंकर परसाई, हिंदी के प्रतिनधि निबंध, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी, पृष्ठ सं.९७
III. परसाई रचनावली- भाग२, आवारा भीड़ के खतरे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.४४
IV. जिंदगी और मौत का दस्तावेज- हरिशंकर परसाई, https://hindikahani.hindi-kavita.com/Jindagi-Aur-Maut-Ka-Dastavez-Harishankar-Parsai.php
V. निंदा रस- हरिशंकर परसाई, https://hindikahani.hindi-kavita.com/Ninda-Ras-Harishankar-Parsai.php
VI. बैष्णव की फिसलन, हरिशंकर परसाई, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2019 संस्करण-10 पृष्ठ सं.१०
VII. ऐसा भी सोचा जाता है- हरिशंकर परसाई, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.32
VIII. एक गौभक्त से भेंट- हरिशंकर परसाई, https://hindikahani.hindi-kavita.com/Ek-Gaubhakt-Se-Bhent-Harishankar-Parsai.php
IX. तीसरे दर्जे का श्रद्धेय- हरिशंकर परसाई, बैष्णव की फिसलन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2019 संस्करण-10 पृष्ठ सं.28
X. परसाई रचनावली- भाग२, वह जो आदमी है न, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ सं.५२

# A Complete Investigation Of The Chemistry and Molecular Pharmacology of Benzimidazole

**Ashutosh Pathak**
Institute of Pharmacy, Dr. Shakuntala Misra National Rehabilitation University, Mohan Rd, Sarosa Bharosa, Lucknow, Uttar Pradesh India – 226017.

**Abstract:** The benzimidazole category of chemical compounds, which includes anthelmintic, analgesic, and antiulcer medications, is extremely important in medicine. chemical chemistry research is heavily focused on the chemical synthesis of benzimidazoles and their derivatives to produce active pharmaceutical molecules. Concerns about the synthesis of these crucial pharmaceuticals and the pharmaceutical business include the usage of non-environmental organic substances, the employment of high energy synthetic techniques, waste creation, and the use of common harmful technologies. This article offers an overview of the substituted benzimidazoles, including information on their pharmacological effects and environmentally responsible chemical production.

**GRAPHICAL ABSTRACT**

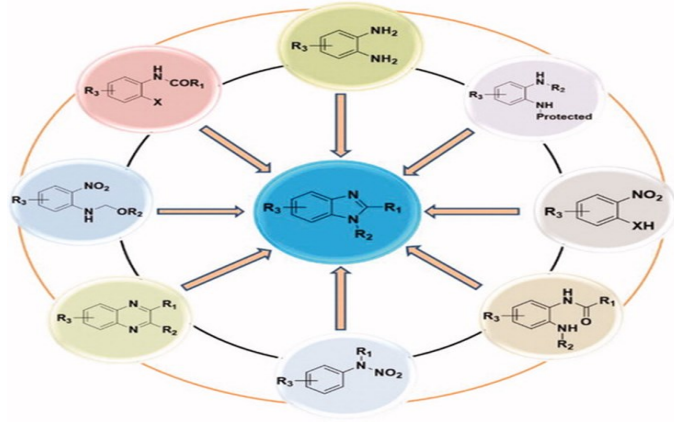


**KEY WORDS**: 5,6-dimethylbenzimidazole, US food Drug Administration (FDA), tautomer's, phenylenediamine, polyphosphoric acid

**INTRODUCTION**-Heterocyclic substance has a ring that contains two or more distinct types of atoms, giving them a cyclic structure. These kinds of substances are found in nature in large quantities and are necessary for life. They are involved in the metabolism of all living cells and include the pyrimidine and purine bases of DNA, proline and histidine, vitamins, and coenzymes, among other essential amino acids. Numerous pharmacologically active heterocyclic compounds exist, many of which are often used in therapeutic settings [1]. Numerous manufactured and naturally existing